Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain college (Ara) (Veer Kunwar Singh University)
Deptt of History
M. A Semester - II
Paper 5. History of IDEAS (I)

Q. प्लेटो के आदर्श राज्य का परीक्षण करें ?

Ans:- प्लेटो ने अपनी कृति रिपब्लिक में एक आदर्श राज्य का प्रतिपादन किया है। उसका विचार है, कि उत्तम जीवन के लिए उत्तम राज्य का होना आवश्यक है। उनका कहना है कि भूमि सम्पत्ति धन के भौतिक स्वामित्व के प्रति लगाव लोगों को भ्रष्ट बना देता है। उनका विचार यह है कि परिवार तथा संपत्ति आदि पर उनका कोई व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होना चाहिए। प्लेटो के राज्य संबंधी विचारों का विवेचन हम निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं:-

राज्य की उत्पत्ति :-

प्लेटो ने राज्य और समाज में कोई अंतर नहीं माना है ऐसा होने का कारण यूनान का वातावरण है, जिसमें वह पैदा हुआ तथा बड़ा हुआ। आकार व जनसंख्या के दृष्टि से यूनान के नगर-राज्य बड़े एकता बद्ध थे। प्रायः प्रत्येक नागरिक किसी-न-किसी रूप में राज्य कार्य में भाग लेता था। और व्यक्ति का

संपूर्ण जीवन राज्य के कार्य क्षेत्र में समाया हुआ था। यही कारण है कि राज्य व समाज प्लेटो को एक प्रतीत हुआ।

प्लेटो के अनुसार राज्य विचारों का उत्थान है। उनके अनुसार संपूर्ण विश्व विचारों की उत्पत्ति है। विचारशक्ति, आत्मशक्ति और वासनाशक्ति के जो तीन तत्व मनुष्यों में पाये जाते हैं, वे ही एक विकसित रूप में राज्य की जनता के विभिन्न वर्गों के रूप में पाये जाते हैं।

राज्य की उत्पत्ति मानव जाति की कठोर आवश्यकताओं के कारण होती है। जीवित रहने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी कुछ कठोर आवश्यकताएँ पूरी हो और उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने साथियों से सहयोग करना पड़ता है और इसी से राज्य आरंभ होता है। प्लेटो के अनुसार मानव स्वभाव में तीन बातें मुख्य हैं - आवश्यकताओं की विविधता, मनुष्य की स्वयं अपर्याप्तता तथा पारस्परिक पर निर्भरता। जीवित रहने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी कुछ न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती है। रोटी, कपड़ा, मकान इसी कोटि में आते हैं।

मनुष्य केवल जीवित ही नहीं रहता बल्कि वह श्रेष्ठ ढंग से जीवित रहता है और उन्नति करता है। इसलिए कहा जाता है कि मनुष्य केवल प्राणी ही नहीं बल्कि वह श्रेष्ठ प्राणी और उन्नतिशील प्राणी भी है। फलतः आवश्यकताएँ बढ़ती रहती हैं, वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं नहीं कर सकता। इसके लिए वह अपने सहयोगियों पर निर्भर रहता है, इस कारण प्लेटो कार्यों के विशिष्टीकरण नीति का प्रतिपादन करता है।

और इस बात पर बल देता है कि उचित यही है कि प्रत्येक व्यक्ति वही कार्य करे जिसे करने के लिए वह अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के कारण सबसे अधिक योग्य हो।

इस प्रसंग में प्लेटो ने कहा है कि "कार्य तभी अच्छा होता है, जब कार्य करने वाले का केवल वही एक पेशा हो जो उसका स्वाभाविक हो और अन्य वस्तुओं को छोड़कर वही ही सही समय पर करे।" अपने जीवन की कठोर वस्तुएँ को छोड़कर वह उसे ही सही समय पर करे। अपने जीवन की कठोर आवश्यकताएं की पूर्ति के लिए पारस्परिक निर्भरता के बन्धनों में मनुष्यों का साथ-२ रहना राज्य का प्रारंभ है।

प्लेटो ने राज्य की वर्गीय संरचना व उसके विकास पर भी प्रकाश डाला है। उसके अनुसार राज्य के विकास का पहला चरण उत्पादक वर्ग है प्रारंभ में लोग केवल कृषक होते हैं अपने को श्रेष्ठ बनाने के परिणामस्वरूप लोग व्यापारी बनते हैं, व्यापारी किसी अन्य वर्ग के लोग नहीं होते हैं बल्कि वे भी उत्पादक वर्ग के ही होते हैं। जब लोगों में धन प्राप्त करने की लालसा बढ़ी और अधिकार जमाने की प्रवृत्ति का उदय हुआ साथ ही जब लोग समृद्ध हुए तो इस बात का भी भय बढ़ा कि कोई विदेशी उन पर आक्रमण न कर दे और जन-जन का विनाश न हो।

जनता का दूसरा वर्ग योद्धाओं का वर्ग अस्तित्व में आया। शांति के समय में वे आक्रमण से राज्य की रक्षा करते थे। युद्ध काल में उनका आक्रमण करना, भूमि जीतना आदि होता था।